

माध्यमिक स्तर पर हिन्दू एवं मुस्लिम छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर तथा स्वप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन

Sanjay Singh

Research Scholar Streem Education Universty

Dr.Vibha Chauhan

Assistant Professor, J.S. Universty Shikohabad. Firozabad

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हिन्दू एवं मुस्लिम छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर तथा स्वप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस हेतु सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा 400 छात्र-छात्राओं (200 हिन्दू, 200 मुस्लिम) का चयन उत्तर प्रदेश के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों से किया गया। आँकड़ों के संकलन हेतु मानकीकृत शैक्षिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त प्राप्तांकों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि तथा टी-मान के आधार पर किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि दोनों समुदायों के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया ($t=2.83$, $df=398$, $p<0.01$), जिसमें मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं का मध्यमान (24.67) हिन्दू समुदाय के छात्र-छात्राओं के मध्यमान (23.6) से अधिक रहा। यह निष्कर्ष सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों, पारिवारिक प्रोत्साहन तथा साहित्यावलोकन में समीक्षित पूर्व अध्ययनों की प्रवृत्तियों के अनुरूप है और शिक्षकों, अभिभावकों तथा नीति-निर्माताओं के लिए सामुदायिक-संवेदनशील मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रमों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

कुंजी शब्द : शैक्षिक आकांक्षा, स्वप्रत्यय, माध्यमिक स्तर, हिन्दू छात्र-छात्राएँ, मुस्लिम छात्र-छात्राएँ, तुलनात्मक अध्ययन, सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की आधारशिला मानी जाती है। यह केवल साक्षरता प्रदान करने का साधन नहीं है, अपितु व्यक्ति की सोच, दृष्टिकोण, मूल्य-प्रणाली तथा जीवन के प्रति उसके सम्पूर्ण दृष्टिकोण को गढ़ने वाली एक शक्तिशाली प्रक्रिया है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को ढालने में सक्षम होता है, और यही प्रक्रिया राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक प्रगति की नींव रखती है। भारत जैसे बहुधार्मिक, बहुभाषी तथा विविधतापूर्ण समाज में शिक्षा का यह दायित्व और भी जटिल तथा महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहाँ विभिन्न धार्मिक समुदायों के छात्र-छात्राएँ भिन्न-भिन्न सामाजिक-आर्थिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आकर एक साझा शिक्षा-व्यवस्था में सम्मिलित होते हैं।

भारतीय संविधान सभी नागरिकों को धर्म, जाति, वर्ण तथा लिंग के भेदभाव के बिना शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार प्रदान करता है, तथापि व्यवहार में विभिन्न धार्मिक समुदायों के मध्य शैक्षिक भागीदारी, उपलब्धि तथा

आकांक्षा के स्तर में अन्तर देखने को मिलता है। जनगणना तथा राष्ट्रीय स्तर के सर्वेक्षणों से यह भी संकेत मिलता है कि मुस्लिम समुदाय, विशेष रूप से बालिकाओं में, साक्षरता तथा उच्च शिक्षा में नामांकन की दर राष्ट्रीय औसत से अपेक्षाकृत कम रही है, जिसके पीछे आर्थिक विवशता, सामाजिक-सांस्कृतिक रूढ़ियाँ, सुरक्षा सम्बन्धी चिन्ताएँ तथा शैक्षिक संस्थानों तक सीमित पहुँच जैसे अनेक कारक उत्तरदायी माने जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि क्या ये सामाजिक-आर्थिक अन्तर छात्र-छात्राओं की मनोवैज्ञानिक संरचना, विशेष रूप से उनकी शैक्षिक आकांक्षा तथा स्वप्रत्यय, को भी प्रभावित करते हैं।

शैक्षिक आकांक्षा से आशय विद्यार्थी की उस आन्तरिक इच्छा या लालसा से है जो उसे अपने वर्तमान शैक्षिक स्तर से ऊँचा उठने तथा भविष्य में किसी निश्चित शैक्षिक अथवा व्यावसायिक लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु प्रेरित करती है। यह आवश्यक नहीं कि आकांक्षा सदैव वास्तविक उपलब्धि में परिणत हो; यह मात्र उस दिशा एवं तीव्रता को दर्शाती है जिसमें विद्यार्थी अपने भविष्य की कल्पना करता है। सोरेन्सन के अनुसार आकांक्षा स्तर व्यक्ति द्वारा स्वयं के लिए निर्धारित विशिष्ट लक्ष्यों से सम्बन्धित है, जो उसकी क्षमता, योग्यता तथा पूर्व की सफलता-असफलता के अनुभवों से प्रभावित होता है। माध्यमिक स्तर, जो कि विद्यार्थी के जीवन की एक निर्णायक सन्धि है, इसी आकांक्षा-निर्माण की प्रक्रिया की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि इसी स्तर पर विद्यार्थी अपने भावी शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्ग के विषय में प्रारम्भिक निर्णय लेना आरम्भ करता है।

स्वप्रत्यय विद्यार्थी के व्यक्तित्व का वह पक्ष है जिसके अन्तर्गत वह स्वयं की योग्यताओं, गुणों, सीमाओं तथा सामाजिक स्थिति के विषय में जो धारणा रखता है, वह सम्मिलित होती है। यह धारणा न केवल विद्यार्थी के व्यवहार, अभिप्रेरणा तथा समायोजन को प्रभावित करती है, बल्कि उसकी शैक्षिक उपलब्धि तथा आकांक्षा स्तर के साथ भी घनिष्ठ रूप से जुड़ी होती है। सकारात्मक स्वप्रत्यय रखने वाला विद्यार्थी सामान्यतः चुनौतियों का सामना अधिक आत्मविश्वास के साथ करता है तथा उच्चतर लक्ष्य निर्धारित करने में संकोच नहीं करता, जबकि नकारात्मक अथवा दुर्बल स्वप्रत्यय विद्यार्थी की आकांक्षा तथा प्रयास दोनों को सीमित कर सकता है। इस प्रकार शैक्षिक आकांक्षा तथा स्वप्रत्यय दोनों ही परस्पर सम्बद्ध निर्माण हैं, जिनका संयुक्त अध्ययन विद्यार्थी के समग्र मनोवैज्ञानिक विकास को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में यह देखा गया है कि हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय के परिवारों की आर्थिक स्थिति, शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण, पारिवारिक प्रोत्साहन का स्वरूप तथा सामाजिक-सांस्कृतिक अपेक्षाएँ भिन्न-भिन्न हो सकती हैं, जो अन्ततः छात्र-छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा तथा स्वप्रत्यय को प्रभावित कर सकती हैं। कुछ अध्ययनों में यह भी संकेत मिला है कि आर्थिक रूप से विपन्न परिवारों के विद्यार्थी, चाहे वे किसी भी धर्म से सम्बन्धित हों, अपेक्षाकृत निम्न शैक्षिक आकांक्षा प्रदर्शित करते हैं, जबकि अभिभावकों का सक्रिय प्रोत्साहन तथा विद्यालयी वातावरण इस आकांक्षा को उन्नत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तथापि भारत के सन्दर्भ में, माध्यमिक स्तर पर विशेष रूप से हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा तथा स्वप्रत्यय की तुलना पर आधारित प्रत्यक्ष अनुभवजन्य अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित संख्या में उपलब्ध हैं।

इसी शोध-रिक्ति (research gap) को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हिन्दू एवं मुस्लिम छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं स्वप्रत्यय का तुलनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। यह अध्ययन न केवल दोनों समुदायों के मध्य विद्यमान सम्भावित अन्तर को सांख्यिकीय रूप से परखता है, अपितु इस अन्तर के सम्भावित सामाजिक कारणों की व्याख्या करने का भी प्रयास करता है, जिससे शिक्षकों, अभिभावकों तथा शिक्षा-नीति निर्माताओं को समुदाय-विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप हस्तक्षेप कार्यक्रम विकसित करने में सहायता मिल सके।

2. अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्यमानों की तुलना करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं के स्वप्रत्यय में पाए जाने वाले सम्भावित अन्तर का विश्लेषण करना तथा इसके सामाजिक-सांस्कृतिक निहितार्थों की विवेचना करना।

3. शोध परिकल्पना

H₀: माध्यमिक स्तर पर हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों तथा स्वप्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है (शून्य परिकल्पना)।

4. साहित्यावलोकन

शैक्षिक आकांक्षा एवं स्वप्रत्यय के क्षेत्र में विगत दो दशकों में भारत तथा विदेशों में अनेक अध्ययन सम्पन्न हुए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख अध्ययनों का विवरण नीचे प्रस्तुत है।

कुमार, संजीव (2015) ने केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताएँ, मूल्य तथा शैक्षिक आकांक्षा के विभिन्न स्तरों पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि विषय पर शोध किया तथा पाया कि इन चरों पर छात्रों के लिंग तथा विद्यालय के भौगोलिक परिक्षेत्र का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है, अर्थात् केन्द्रीय विद्यालय जैसे समरूप संस्थागत वातावरण में सामाजिक विविधता का प्रभाव न्यून हो जाता है।

राय, गीता (2014) द्वारा उत्तराखण्ड राज्य के माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में आकांक्षा स्तर तथा अकादमिक प्रदर्शन पर अभिभावकों के प्रोत्साहन के धनात्मक प्रभाव को प्रदर्शित किया गया, जिससे स्पष्ट होता है कि पारिवारिक वातावरण आकांक्षा-निर्माण की प्रक्रिया में केन्द्रीय भूमिका निभाता है।

हेन्सन, जना मैरी (2013) ने अपने अध्ययन में पाया कि संकाय के शिक्षकों के प्रभावी शिक्षण अभ्यास का विद्यार्थियों की स्नातक शिक्षा में प्रवेश लेने की आकांक्षा पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है, जो यह संकेत करता है कि विद्यालयी कारक भी पारिवारिक कारकों के समान ही महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

शर्मा, प्रवीण कुमार (2013) ने प्राथमिक विद्यालयों के बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के आकांक्षा स्तर, प्रभावशीलता तथा स्व-धारणा का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा पाया कि शिक्षक प्रभावशीलता की स्व-धारणा तथा कार्यात्मक मूल्यों से सहसम्बन्ध की मात्रा औसत स्तरीय है, जबकि सुविधा स्तर एवं आकांक्षा स्तर से सहसम्बन्ध निम्न स्तरीय पाया गया।

एलिस, माइल्स एवं रिचर्ड, लिन्ने (2012) ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि शिक्षक की व्यक्तिगत विशेषताएँ — जैसे शिक्षण के प्रति उत्तेजना, छात्रों के प्रति समर्पण तथा उनकी देखभाल — विद्यार्थियों को उच्च आकांक्षा हेतु प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

शर्मा, राजलक्ष्मी (2011) के अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि कला तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक अन्तर उपस्थित है, जो यह दर्शाता है कि विषय-चयन तथा आकांक्षा स्तर के मध्य भी सम्बन्ध हो सकता है।

दास, अरियानी एवं मिरदाद (2015) तथा जेनियार्टो (2004) के अध्ययनों में सामाजिक-आर्थिक स्थिति का विद्यार्थियों की शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव पाया गया, जिससे यह पुष्टि होती है कि आर्थिक विपन्नता आकांक्षा स्तर को अवरुद्ध करने वाला एक प्रमुख कारक हो सकती है।

पेटर, एस.एल. एवं अन्य (2007) ने पश्चिमी चीन के विश्वविद्यालय विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में यह प्रदर्शित किया कि शैक्षिक आकांक्षा तथा शिक्षा-नीति के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध है तथा नीतिगत परिवर्तन विद्यार्थियों की आकांक्षा को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

रानी, सरला, अंजलि, ऊषा एवं सुदेश (2023) द्वारा हरियाणा के सोनीपत जनपद में किए गए एक हालिया अध्ययन में विद्यार्थियों के स्वप्रत्यय तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया, साथ ही यह भी पाया गया कि लिंग तथा विद्यालय के प्रकार के आधार पर स्वप्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

बर्मन, प्रणब एवं दास, पयेल (2024) ने पश्चिम बंगाल के कुम्भकार समुदाय के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में पाया कि सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों के विद्यार्थियों में स्वप्रत्यय का स्तर अधिकांशतः मध्यम श्रेणी में रहता है, तथा इसे उन्नत करने हेतु समावेशी शिक्षा-नीतियों की आवश्यकता पर बल दिया गया।

अहमद, ए. एवं सिकदर, एस. (2013) द्वारा बंगलुरु शहर की उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हिन्दू एवं मुस्लिम युवतियों पर किए गए गुणात्मक अध्ययन में यह पाया गया कि दोनों समुदायों की छात्राओं को आर्थिक विवशता, सार्वजनिक स्थलों पर असुरक्षा तथा सामाजिक नियंत्रण जैसी समान चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, परन्तु मुस्लिम छात्राओं के लिए यह चुनौतियाँ उनकी अल्पसंख्यक सामाजिक स्थिति के कारण और अधिक जटिल हो जाती हैं।

आलम, मोहम्मद संजीर (2013) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि मुस्लिम समुदाय में आर्थिक तथा व्यावसायिक अवसरों की सीमितता के कारण शिक्षा के प्रति आकांक्षा एवं माँग सामान्यतः निम्न स्तर की पाई जाती है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी शैक्षिक पिछड़ेपन के चक्र को बनाए रखने में योगदान देती है।

उपरोक्त साहित्यावलोकन से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक आकांक्षा तथा स्वप्रत्यय पर लिंग, विद्यालय के प्रकार, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, अभिभावकीय प्रोत्साहन तथा शिक्षक-प्रभावशीलता जैसे अनेक चरों का अध्ययन पूर्व में किया जा चुका है, तथापि माध्यमिक स्तर पर विशेष रूप से हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा एवं स्वप्रत्यय की सीधी तुलना पर आधारित समर्पित अनुभवजन्य अध्ययन भारतीय सन्दर्भ में अत्यन्त सीमित हैं। यही शोध-रिक्ति प्रस्तुत अध्ययन के औचित्य को स्थापित करती है।

5. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है, जो सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान में समूहों के मध्य तुलनात्मक विश्लेषण हेतु व्यापक रूप से प्रयुक्त होती है। न्यादर्श के चयन हेतु सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि अपनाई गई। अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश राज्य के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों से कुल 400 छात्र-

छात्राओं का चयन किया गया, जिसमें 200 हिन्दू समुदाय तथा 200 मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राएँ सम्मिलित थे। न्यादर्श के चयन में यह सुनिश्चित किया गया कि दोनों समूह आयु, कक्षा-स्तर तथा विद्यालय के प्रकार (सरकारी/अर्द्ध-सरकारी) की दृष्टि से यथासम्भव समरूप हों, जिससे बाह्य चरों का प्रभाव न्यूनतम रहे।

आँकड़ों के संकलन हेतु मानकीकृत शैक्षिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया, जिसके प्रत्येक कथन पर विद्यार्थी को अपनी सहमति अथवा असहमति व्यक्त करनी थी। मापनी का प्रशासन विद्यालय समय में समूह रूप में किया गया तथा विद्यार्थियों को अनुदेश दिया गया कि वे प्रश्नावली को स्वतन्त्र एवं ईमानदार रूप से भरें। मापनी की विश्वसनीयता तथा वैधता पूर्व-स्थापित मानकों के अनुरूप संतोषजनक पाई गई। स्वप्रत्यय के मापन हेतु भी एक मानकीकृत स्वप्रत्यय मापनी का प्रयोग प्रस्तावित किया गया था, यद्यपि प्रस्तुत शोध-पत्र में सांख्यिकीय विश्लेषण मुख्य रूप से शैक्षिक आकांक्षा चर पर केन्द्रित है; स्वप्रत्यय सम्बन्धी विस्तृत मात्रात्मक परिणाम मूल शोध-प्रबन्ध (थीसिस) के अगले अध्याय में प्रस्तुत किए जाने हैं।

संकलित आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि तथा टी-मान जैसी प्रविधियों का प्रयोग किया गया। परिकल्पना की सार्थकता की जाँच हेतु 0.01 तथा 0.05 सार्थकता स्तरों को आधार बनाया गया तथा स्वतन्त्रता के अंश (df) के अनुरूप सारणीबद्ध मानों से प्राप्त टी-मान की तुलना की गई। समस्त सांख्यिकीय गणनाएँ मानक सांख्यिकीय सूत्रों के आधार पर की गईं।

6. परिणाम एवं विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में एकत्रित आँकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों को सारणी संख्या-1 में प्रस्तुत किया गया है, जो माध्यमिक स्तर पर हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-मान को दर्शाती है।

सारणी संख्या-1: हिन्दू एवं मुस्लिम छात्र-छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक विवरण

छात्र/छात्राएँ	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	अन्तर की मानक त्रुटि (SEd)	मध्यमानों का अन्तर (D)	स्वतन्त्रता के अंश (df)	आलोचनात्मक अनुपात (C.R./t)
हिन्दू छात्र/छात्राएँ	200	23.6	3.88	0.378	1.07	398	2.83*
मुस्लिम छात्र/छात्राएँ	200	24.67	3.67				

0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक (सारणीबद्ध मान = 2.59)

सारणी संख्या-1 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 23.6 तथा 24.67 हैं, तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 3.88 तथा 3.67 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 0.378 है तथा मध्यमानों का वास्तविक अन्तर 1.07 है। इन आँकड़ों के आधार पर प्राप्त आलोचनात्मक अनुपात (टी-मान) 2.83 है, जो स्वतन्त्रता के अंश 398 हेतु 0.01 सार्थकता स्तर पर आवश्यक सारणीबद्ध मान 2.59 से अधिक है। अतः यह स्पष्ट है कि दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर विद्यमान है, और शून्य परिकल्पना, जिसमें यह माना गया था कि दोनों समुदायों के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है।

इस अन्तर की दिशा भी उल्लेखनीय है। साधारणतः यह पूर्वधारणा बनाई जा सकती थी कि सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत सुविधासम्पन्न समझे जाने वाले समुदाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा अधिक होगी, परन्तु प्रस्तुत अध्ययन में मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं का मध्यमान (24.67) हिन्दू समुदाय के छात्र-छात्राओं के मध्यमान (23.6) से अधिक पाया गया। यह परिणाम प्रथम दृष्टया आश्चर्यजनक प्रतीत हो सकता है, परन्तु इसे इस दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है कि जो समुदाय शैक्षिक दृष्टि से अपेक्षाकृत पिछड़ा हुआ अनुभव करता है, उसमें शिक्षा के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता प्राप्त करने की आकांक्षा अधिक प्रबल हो सकती है — अर्थात् वर्तमान शैक्षिक स्थिति तथा भविष्य की आकांक्षा में एक प्रकार का प्रतिपूरक सम्बन्ध कार्य कर सकता है।

मध्यमानों के अन्तर के व्यावहारिक महत्त्व (प्रभाव आकार) का आकलन करने हेतु कोहेन के 'd' सांख्यिकी का उपयोग किया जा सकता है, जिसकी गणना दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर को उनके सम्मिलित मानक विचलन से विभाजित करके की जाती है। प्राप्त आँकड़ों के आधार पर सम्मिलित मानक विचलन लगभग 3.78 आता है, जिससे प्रभाव आकार (d) लगभग 0.28 प्राप्त होता है। कोहेन के मानदण्डों के अनुसार यह एक लघु से मध्यम श्रेणी का प्रभाव आकार माना जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि यद्यपि सांख्यिकीय दृष्टि से यह अन्तर अत्यन्त सार्थक है (400 के बड़े न्यादर्श आकार के कारण), तथापि व्यावहारिक स्तर पर यह अन्तर अत्यधिक व्यापक नहीं है — दोनों समुदायों के अधिकांश छात्र-छात्राओं की आकांक्षा के वितरण में पर्याप्त सम्मिश्रण विद्यमान है।

मानक विचलन के आँकड़ों की तुलना करने पर यह भी ध्यातव्य है कि हिन्दू समूह का मानक विचलन (3.88) मुस्लिम समूह के मानक विचलन (3.67) की तुलना में थोड़ा अधिक है, जो यह संकेत करता है कि हिन्दू समुदाय के छात्र-छात्राओं में शैक्षिक आकांक्षा की विविधता (variability) मुस्लिम समुदाय की तुलना में थोड़ी अधिक है। यह भिन्नता सम्भवतः हिन्दू समुदाय के भीतर विद्यमान सामाजिक-आर्थिक तथा जातीय विविधता के अधिक व्यापक स्वरूप के कारण हो सकती है, जबकि मुस्लिम समुदाय के न्यादर्श में अपेक्षाकृत अधिक सजातीय सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि होने की सम्भावना है।

शोधकर्ता द्वारा एकत्रित गुणात्मक प्रेक्षणों तथा विद्यालय-स्तरीय सूचनाओं के आधार पर यह भी पाया गया कि जिन विद्यालयों में अभिभावक-अध्यापक सम्पर्क अधिक नियमित था, वहाँ दोनों समुदायों के छात्र-छात्राओं के मध्य आकांक्षा स्तर का अन्तर अपेक्षाकृत कम था, जबकि जिन विद्यालयों में यह सम्पर्क सीमित था, वहाँ यह अन्तर अधिक स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ। यद्यपि यह प्रेक्षण अध्ययन के औपचारिक परिकल्पना-परीक्षण का भाग नहीं था, तथापि यह भविष्य के अनुसन्धान हेतु एक महत्त्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

लिंग के आधार पर उप-समूह विश्लेषण करने पर (यद्यपि यह प्रस्तुत शोध-पत्र की मुख्य परिकल्पना का भाग नहीं था) यह प्रवृत्ति देखी गई कि दोनों समुदायों में बालकों की तुलना में बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा में अपेक्षाकृत अधिक विविधता पाई गई, जो साहित्यावलोकन में उल्लिखित उन अध्ययनों से सामंजस्य रखती है जिनमें बालिकाओं की शिक्षा के प्रति सामाजिक अपेक्षाओं में समुदाय-विशेष अन्तर पाया गया है। यह परिणाम पुनः इस बात की पुष्टि करता है कि शैक्षिक आकांक्षा को समझने हेतु केवल धार्मिक समुदाय ही नहीं, अपितु लिंग, पारिवारिक शिक्षा-स्तर तथा आर्थिक स्थिति जैसे अनेक अन्तर्सम्बद्ध चरों को भी साथ में देखा जाना आवश्यक है।

संक्षेप में, प्राप्त परिणाम इस बात की पुष्टि करते हैं कि माध्यमिक स्तर पर हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर की दृष्टि से समानता नहीं है, तथा यह अन्तर संयोगवश नहीं अपितु सामाजिक-सांस्कृतिक तथा आर्थिक कारकों की जटिल अन्तःक्रिया का परिणाम प्रतीत होता है।

7. परिचर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम पूर्व में सम्पन्न कुछ अध्ययनों की प्रवृत्तियों से मेल खाते हैं। शर्मा, राजलक्ष्मी (2011) तथा दास, अरियानी एवं मिरदाद (2015) के अध्ययनों में भी विभिन्न सामाजिक समूहों के मध्य शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक अन्तर पाया गया था, जिसकी पुष्टि प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से भी होती है। साथ ही, आलम (2013) तथा अहमद एवं सिकदर (2013) के अध्ययनों में उल्लिखित यह तथ्य कि अल्पसंख्यक सामाजिक स्थिति शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को जटिल बनाती है, प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों की व्याख्या में सहायक सिद्ध होता है — भले ही इस अध्ययन में दिशा (मुस्लिम समूह का उच्चतर मध्यमान) पूर्व की सामान्य धारणा से भिन्न प्रतीत होती हो।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि उच्च शैक्षिक आकांक्षा का अनिवार्यतः यह अर्थ नहीं है कि उस समुदाय के समक्ष शैक्षिक अवसरों की कोई कमी नहीं है। वस्तुतः राष्ट्रीय स्तर के आँकड़े यह दर्शाते हैं कि मुस्लिम समुदाय में उच्च शिक्षा में नामांकन की दर अन्य समुदायों की तुलना में अपेक्षाकृत कम रही है, विशेष रूप से उत्तर भारत के राज्यों में। ऐसी स्थिति में उच्च आकांक्षा स्तर तथा वास्तविक शैक्षिक उपलब्धि के मध्य विद्यमान सम्भावित अन्तराल एक महत्वपूर्ण शोध-प्रश्न के रूप में उभरता है, जिस पर भविष्य में गहन अध्ययन की आवश्यकता है। सम्भव है कि आर्थिक विवशता, संस्थागत बाधाएँ अथवा सामाजिक भेदभाव के कारण उच्च आकांक्षा रखने वाले अनेक मुस्लिम छात्र-छात्राएँ अपनी आकांक्षाओं को वास्तविक शैक्षिक उपलब्धि में परिणत करने में असमर्थ रह जाते हों।

दूसरी ओर, यह परिणाम शिक्षा-मनोविज्ञान के उस सैद्धान्तिक दृष्टिकोण की भी पुष्टि करता प्रतीत होता है जिसके अनुसार सामाजिक रूप से वंचित समूहों में शिक्षा को सामाजिक उत्थान के सबसे सुलभ एवं वैधानिक साधन के रूप में देखा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप ऐसे समूहों में शिक्षा के प्रति आकांक्षा कभी-कभी अपेक्षाकृत अधिक सुविधासम्पन्न समूहों की तुलना में अधिक तीव्र हो सकती है। यह व्याख्या रानी एवं सहयोगियों (2023) तथा बर्मन एवं दास (2024) के उन निष्कर्षों से भी सामंजस्य रखती है जिनमें सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समुदायों के विद्यार्थियों में स्वप्रत्यय तथा आकांक्षा के मध्य जटिल परन्तु सकारात्मक सम्बन्ध की ओर संकेत किया गया है।

अध्ययन की कुछ सीमाएँ भी उल्लेखनीय हैं। प्रथमतः, न्यादर्श उत्तर प्रदेश के सीमित भौगोलिक क्षेत्र से लिया गया है, अतः परिणामों का सामान्यीकरण सम्पूर्ण देश के सन्दर्भ में सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। द्वितीयतः, अध्ययन में शैक्षिक आकांक्षा के मापन हेतु स्व-प्रतिवेदित मापनी का प्रयोग किया गया है, जिसमें सामाजिक वांछनीयता के प्रभाव की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। तृतीयतः, पारिवारिक आय, माता-पिता की शिक्षा तथा व्यवसाय जैसे महत्वपूर्ण चरों को इस विश्लेषण में सांख्यिकीय रूप से नियंत्रित नहीं किया जा सका, जो भविष्य के अध्ययनों में सम्मिलित किए जाने योग्य हैं।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आँकड़ा-विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर पर हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर उपस्थित है ($t=2.83$, $df=398$, $p<0.01$), जिसमें मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं का मध्यमान हिन्दू समुदाय की तुलना में अधिक पाया गया। अतः प्रस्तुत शून्य परिकल्पना, जो यह मानती थी कि दोनों समुदायों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। यह अन्तर, यद्यपि सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है, व्यावहारिक प्रभाव आकार की दृष्टि से लघु-मध्यम श्रेणी का है, जो यह संकेत करता है कि धार्मिक समुदाय अकेले शैक्षिक आकांक्षा का निर्धारक नहीं है, अपितु यह पारिवारिक, आर्थिक तथा संस्थागत कारकों के साथ मिलकर कार्य करता है।

अध्ययन के निष्कर्ष यह भी रेखांकित करते हैं कि उच्च शैक्षिक आकांक्षा को वास्तविक शैक्षिक उपलब्धि में परिणत करने हेतु दोनों समुदायों, विशेषतः मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं को, पर्याप्त संस्थागत सहयोग, छात्रवृत्तियाँ, परामर्श सेवाएँ तथा अभिभावक-जागरूकता कार्यक्रम उपलब्ध कराए जाने आवश्यक हैं, जिससे उनकी आकांक्षा तथा उपलब्धि के मध्य विद्यमान सम्भावित अन्तराल को कम किया जा सके तथा शिक्षा का समान लाभ सभी समुदायों तक पहुँच सके।

9. सुझाव

1. हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय के छात्र-छात्राओं के अभिभावकों को इस विषय में सजग किया जाना चाहिए कि उनकी सन्तान क्या प्राप्त करना चाहती है तथा उसका शैक्षिक लक्ष्य क्या है, जिससे पारिवारिक प्रोत्साहन को उचित दिशा दी जा सके।
2. दोनों समुदायों के छात्र-छात्राओं की आकांक्षा स्तर तथा स्वप्रत्यय को ध्यान में रखते हुए विद्यालय-स्तर पर नियमित परामर्श कक्षाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।
3. मुस्लिम छात्राओं की शिक्षा में निरन्तरता बनाए रखने हेतु छात्रवृत्ति तथा वित्तीय सहायता योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है।
4. अभिभावक-अध्यापक की मासिक मिटिंगों का आयोजन कर सामाजिक-सांस्कृतिक वर्जनाओं के प्रति दृष्टिकोण में आधुनिकता लाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
5. भविष्य के शोधकर्ताओं को चाहिए कि वे पारिवारिक आय, अभिभावकीय शिक्षा-स्तर तथा विद्यालय के प्रकार जैसे चरों को नियंत्रित करते हुए बड़े एवं भौगोलिक रूप से अधिक व्यापक न्यादर्श पर अनुदैर्ध्य अध्ययन करें, जिससे आकांक्षा-उपलब्धि अन्तराल की गहनता से जाँच की जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आलम, मोहम्मद संजीर (2013). एजुकेशन एण्ड एक्सक्लूज़न ऑफ मुस्लिम्स, इण्डिया: सोशल डेवलपमेंट रिपोर्ट, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
2. अहमद, ए. एवं सिकदर, एस. (2013). बैरियर्स टू हायर एजुकेशन: कॉमनैलिटीज़ एण्ड कॉन्ट्रास्ट्स इन द एक्सपीरियेंसेज़ ऑफ हिन्दू एण्ड मुस्लिम यंग विमेन इन अर्बन बंगलुरु, कम्पेरेटिव एजुकेशन, 49(2)।
3. अश्रफ, एस. डब्ल्यू. ए. एवं अहमद, ए. (2012). मुस्लिम वुमेन एजुकेशन एण्ड एम्पावरमेंट, जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज़।
4. बाजपेयी, अमिता एवं कन्नौजिया, आरती (2007). शैक्षिक आकांक्षा एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति: एक तुलनात्मक अध्ययन, इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल स्टडीज़।
5. बर्मन, प्रणब एवं दास, पयेल (2024). एकेडेमिक सेल्फ-कॉन्सेप्ट एण्ड एकेडेमिक अचीवमेंट: एन एम्पिरिकल एविडेंस फ्रॉम कुम्भकार कम्युनिटी स्टूडेंट्स एट सेकेण्डरी लेवल, मीर जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज़ ट्रेंड्स एण्ड प्रैक्टिसेज़, 14(1), 172-192।

6. चौधरी, विनिता (2003). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, डॉक्टरल थीसिस, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
7. दास, अरियानी एवं मिरदाद (2015). सोशियो-इकोनॉमिक स्टेटस एण्ड एजुकेशनल एस्पाइरेशन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स, जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च।
8. एलिस, माइल्स एवं रिचर्ड, लिन्ने (2012). टीचिंग द वे: एस्पायर टू टीच नाउ एण्ड इन द फ्यूचर, नेशनल कॉलेज फॉर स्कूल लीडरशिप, यू.के.।
9. गुप्ता एवं गुप्ता (2007). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
10. गैरेट, एच.ई. (1981). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, दशम संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे।
11. हेन्सन, जना मैरी (2013). अंडरस्टैंडिंग ग्रेजुएट स्कूल एस्पाइरेशन्स: द इफैक्ट ऑफ गुड टीचिंग प्रैक्टिस, पी-एच.डी. (एजुकेशन) ग्रेजुएट कॉलिज, यूनिवर्सिटी ऑफ आयोवा, अमेरिका।
12. जेनियार्टो (2004). एन इफैक्ट ऑफ सोशियो इकोनॉमिक स्टेटस ऑन एजुकेशनल एण्ड वोकेशनल एस्पाइरेशन ऑफ यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स, सोशल साइंस क्वार्टरली, 98(4), 1048-1055।
13. कोठारी, सी.आर. (2004). रिसर्च मैथडोलॉजी: मैथड्स एण्ड टेक्नीक्स, न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
14. कुमार, संजीव (2015). केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकताएँ, मूल्य तथा शैक्षिक आकांक्षा के विभिन्न स्तरों पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि, डॉक्टरल थीसिस, शिक्षा विभाग।
15. कुप्पुस्वामी, बी. (1981). मैनुअल ऑफ सोशियो-इकोनॉमिक स्टेटस स्केल (अर्बन), मानसायन प्रकाशन, दिल्ली।
16. मदरासोवा, गेकोवा एट ऑल (2010). एजुकेशनल एस्पाइरेशन अमंग एथनिक माइनोरिटी स्टूडेंट्स, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट।
17. मार्श, एच.डब्ल्यू. (1992). सेल्फ डिस्क्रिप्शन क्वेश्चनेयर (एस.डी.क्यू.) मैनुअल, यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न सिडनी।
18. नाम्बिसन, जी. (2009). एक्सक्लूज़न एण्ड डिस्क्रिमिनेशन इन स्कूल: एक्सपीरियंसेज़ ऑफ दलित चिल्ड्रन, इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ दलित स्टडीज़, नई दिल्ली।
19. पेटर, एस.एल. एवं अन्य (2007). एजुकेशनल एस्पाइरेशन्स एण्ड पॉलिसी इम्प्लीकेशन्स: अ स्टडी ऑफ यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स इन वेस्टर्न चाइना, जनरल ऑफ हायर एजुकेशन पोलिसी एण्ड मैनेजमेन्ट, 29(2), 143-158।

20. रानी, सरला, अंजलि, ऊषा एवं सुदेश (2023). ए स्टडी ऑफ एकेडेमिक अचीवमेंट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू सेल्फ-कॉन्सेप्ट, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 11(2), 2868-2872।
21. रस्तोगी एवं रानी, मुक्ता (2009). सेल्फ कॉन्सेप्ट स्केल, नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा।
22. राय, गीता (2014). अभिभावकों के प्रोत्साहन प्रभाव का माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं अकादमिक प्रदर्शन पर प्रभाव, डॉक्टरल थीसिस, उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय।
23. रोसेन्बर्ग, एम. (1965). सोसाइटी एण्ड द एडोलसेंट सेल्फ-इमेज, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यू जर्सी।
24. सरस्वत, आर.के. (1984). सेल्फ-कॉन्सेप्ट क्वांटिफायर (एस.सी.क्यू.), नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा।
25. शर्मा, प्रवीण कुमार (2013). प्राथमिक विद्यालयों के बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के आकांक्षा स्तर, प्रभावशीलता, सुविधा स्तर, स्व-धारणा व कार्यात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, पी-एच.डी. शिक्षा विभाग, जैन विश्वविद्यालय, लाडनूँ।
26. शर्मा, राजलक्ष्मी (2011). स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की आकांक्षा, आत्मविश्वास, सेवा अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, डॉक्टरल थीसिस, जैन विश्व भारती यूनिवर्सिटी, लाडनूँ।
27. शर्मा, सुरेन्द्र (2007). रिसर्च मैथडोलॉजी: शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
28. बेस्ट, जे.डब्ल्यू. एवं खान, जे.वी. (2006). रिसर्च इन एजुकेशन, दशम् संस्करण, प्रेंटिस-हॉल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
29. भारत सरकार (2011). जनगणना रिपोर्ट 2011: धार्मिक समुदायों की साक्षरता दर, भारत के महापंजीयक कार्यालय, नई दिल्ली।
- 30^प मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020^ए भारत सरकार^ए नई दिल्ली।